प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
एम.ए., पीएच्.डी.
हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **सारीका प्रकाश बनकर** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिये **''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना''(बलचनमा, नई पौध, दु:खमोचन, बाबा बटेसरनाथ, रतिनाथ की चाची के संदर्भ में)** शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थीनी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये है। मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। सारीका प्रकाश बनकर के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ।

सातारा
दिनांक - 16-9-2004

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
शोध-निर्देशक

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि, सारीका प्रकाश बनकर का एम्.फिल्. (हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध **''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना''(बलचनमा, नई पौध, दु:खमोचन, बाबा बटेसरनाथ, रतिनाथ की चाची के संदर्भ में)** परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE SATARA

सुहास साळुंखे
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

प्रख्यापन

''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना''(बलचनमा, नई पौध, दु:खमोचन, बाबा बटेसरनाथ, रतिनाथ की चाची के संदर्भ में) यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिये प्रस्तुत नहीं की गई है।

S.P. Bankar.

सातारा **(सारीका प्रकाश बनकर)**

दिनांक 16-9-2004

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा में वृद्धि लक्षित हो रही है। हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। समाज जीवन का चित्रण करना उपन्यास की विशेषता रही है। आधुनिक काल में 'उपन्यास सम्राट' मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास विधा को बल दिया। प्रेमचंद के कारण ही दलित, शोषित, उपेक्षित व्यक्ति, नारी, झुग्गी झोपडी और ग्रामजीवन आदि पर उपन्यास लिखे गये। भारत को 'ग्रामों का देश' कहा जाता है। भारत देश के 75% लोग गाँव में बसनेवाले है। धीरे-धीरे ग्रामजीवन में बदलाव होने लगा। अप्रगत ग्राम प्रगति के पथ पर चलने लगा और गाँवों का परिवर्तन होने लगा। गाँवो में नई चेतना, सुधार की लहर, विकास आदि नई भावधाराएँ बहने लगी। ग्राम जीवन में प्रगतिवादी चेतना का अध्ययन करना इस लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

गांधीजी के 'देहात की ओर चलो' इस नारे के अनुसार हिंदी साहित्यकारों ने जन-जीवन को विषय बनाकर साहित्य कृतियों का निर्माण किया। अज्ञानी, अंधविश्वासी, रुढि-परंपरावादी ऐसे भोले भाले ग्रामीण जनों की जीवन की कथा-व्यथा को वाणी देने का और उनमें प्रगतिशील विचारों की चेतना निर्माण करने का कार्य साहित्यकारों ने किया। प्रेमचंद, नागार्जुन, रेणु, भैरवप्रसाद गुप्त, शैलेश मटियानी, हिमांशु जोशी, शिवप्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र आदि जैसे कई उपन्यासकारों के ग्रामजीवन से संबंधित महत्वपूर्ण कृतियों का निर्माण किया। डॉ.आदर्श सक्सेना, डॉ. विवेकी राय, पारसनाथ सिंह, डॉ.ज्ञानचंद गुप्त, डॉ. ह. के. कडवे, डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर आदि कई श्रेष्ठ आलोचको ने एवं अनुसंधाताओं ने उपन्यास के सभी पहलूँओं पर विस्तृत विवेचन किया, जिसके कारण उपन्यास विधा का विकास हुआ।

हिंदी उपन्यास विधा में नागार्जुन का विशेष महत्व रहा है। नागार्जुन ने उपन्यास विधा में आंचलिक उपन्यास की प्रथम शुरुआत की है। उन्होंने ग्राम जीवन से जुडे उपन्यासों का निर्माण किया। उनके उपन्यासों में ग्राम जीवन के सभी तत्व विशेषताएँ और प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है। ग्राम जीवन की

सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमी, अंधविश्वास, विवाह संस्कार, रुढि-प्रथा, राजनीतिक शोषण, औद्योगिकरण का अभाव, शोषित नारी, भ्रष्टाचार आदि सभी का चित्रण उपन्यासों में हुआ है। ग्रामबोली को माध्यम बनाकर देश काल वातावरण को बदल दिया है।

नागार्जुन ने उपन्यासों का ग्राम जीवन समाजवादी चेतना के निकट है। शोषण और वर्ग वैषम्यता का अंत होना, यही उनके उपन्यासों का मूल स्वर है। उन्होंने ऐसी क्रांति का सूत्रपात करने का प्रयत्न अपनी कृतियो में किया है, जिसका संबंध ग्रामीण जीवन से अधिक है। जिसके सफल होने से ग्रामों में स्थित रुढियाँ एवं जर्जरित मान्यताएं समाप्त होगी और समाजवादी ग्राम-समाज की नवरचना होगी। यह स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश रहा है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लिए 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दु:खमोचन' आदि उपन्यासों का आधार लिया है। इन उपन्यासों के द्वारा नागार्जुन के उपन्यासो के ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना का चित्रण पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध छ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय :-

''नागार्जुन का व्यक्तित्व और कृतित्व'' इस अध्याय में नागार्जुन का व्यक्तित्व इसमें जन्म, बचपन, परिवार, शिक्षा, विवाह, नौकरी और नागार्जुन के बाह्य व्यक्तित्व और आंतरीक व्यक्तित्व का वर्णन किया है। उनके कृतित्व में उनके उपन्यास, काव्य, कहानी, यात्राप्रसंग, निबंध, संस्मरण, भाषण, चिठ्ठीपत्री और पुरस्कार आदि को स्पष्ट करने का कार्य किया है।

द्वितीय अध्याय :-

''नागार्जुन के उपन्यासों में कथ्यवस्तु'' इस अध्याय में कथावस्तु के तत्व की प्रथम जानकारी दी है। साथ-ही-साथ कथावस्तु के प्रकार और कथावस्तु का महत्त्व स्पष्ट किया है। नागार्जुन के उपन्यास 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दु:खमोचन' उपन्यासों की कथावस्तु का चित्रण किया है।

तृतीय अध्याय :-

''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन'' इस अध्याय में 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दु:खमोचन' आदि उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन को स्पष्ट किया है। आलोच्य उपन्यासों में ग्रामजीवन एवं ग्रामव्यवस्था, रुढी परंपरा, अंधश्रद्धा, धर्म व्यवस्था, जातीय भेदाभेद, नारी की स्थिति, अवैध संबंध, शिक्षा व्यवस्था, शोषण के आयाम, राजनीतिक चेतना, प्राकृतिक आपदा, विवाह संस्कार, मृतक संस्कार, संगठन, आदि को स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय :-

''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन की समस्याएँ'' इसके अंतर्गत अंधविश्वास की समस्या, शोषण की समस्या, जाती भेदाभेद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, अशिक्षा की समस्या, यौन संबंधों की समस्या आदि समस्याओं का विस्तार के साथ विवेचन किया है। साथ-ही-साथ नशापान की समस्या, भूख की समस्या, प्राकृतिक आपदा की समस्या, भौतिक सुविधाओं का अभाव की समस्या, आदि गौण समस्याओं पर भी विचार किया है।

पंचम अध्याय :-

''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित प्रगतिवादी चेतना'' इस अध्याय में प्रगतिवाद और प्रगतिवादी उपन्यासकार, प्रतिनिधी पात्र, उपन्यास और चेतना, नागार्जुन के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ और समाजवादी चेतना, विभिन्न आंदोलनों की अभिव्यक्ति साथ-ही-साथ नागार्जुन के उपन्यासों में प्रगतिवादी, चेतीत, विद्रोही, संघर्षरत ग्रामजीवन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

षष्ठ अध्याय :-

''उपसंहार'' में प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया है। नागार्जुन के उपन्यासों के वर्णन के साथ उपन्यासों के ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना पर विचार किया है। साथही ग्रामों में होनेवाले परिवर्तन, सुधार आदि पर विचार किया है।

यह मेरा सौभाग्य है कि, मुझे लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉ. बी. डी. सगरे के निर्देशन में शोध-कार्य करने का अवसर मिला, उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा के कारण यह शोध-कार्य संपन्न हो सका। श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. बी. डी. सगरे जी ने व्यस्त क्षणों में अपना अमूल्य समय देकर बहुमुल्य निर्देशों के द्वारा ग्रामीण उपन्यास के अध्ययन में मुझे उत्साह और प्रेरणा दी। उसके फलस्वरुप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका। उनके प्रति शाब्दिक आभार मेरे हृदय में स्थित कृतज्ञपूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है।

प्रस्तुत शोध-कार्य में प्राचार्य सुहास साळुंखे, प्रा.जयवंत जाधव आदि के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर बहुमुल्य मार्गदर्शन किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री.कुंभार तथा अन्य कर्मचारी और किसन वीर महाविद्यालय वाई के लिपिक भास्कर घोणे आदि की मैं विशेष ऋणी रहूँगी, जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में अत्यंत तत्परता से मेरी सहायता की।

मेरे शोध-कार्य में सदा प्रेरणा देने वाले मेरे पूज्य पिताजी प्रकाश ज्ञानेश्वर बनकर, माँ आशा प्रकाश बनकर, मेरे ससुर लक्ष्मण गणपत लोखंडे, साँस विमल लक्ष्मण लोखंडे और मेरे पति सुनिल लक्ष्मण लोखंडे, देवर संजय लोखंडे, देवरानी सुश्री कविता लोखंडे मेरे नानाजी शंकर मारुती बनसोडे, नानीजी ताईबाई शंकर बनसोडे आदि के अशिश के बल पर प्रस्तुत शोध-कार्य संपन्न हुआ। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ-ही-साथ मेरा बेटा अथर्व, किरण, भाई प्रशांत, मेरे देवर धीरज लोखंडे, मेरे सहकारी विद्या लादे, मिनल शिंदे, वैशाली पाटील, वैशाली तळेगांवकर आदि ने विशेष मदद की है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

अंत में इस लघु-शोध-प्रबंध को अत्यन्त कम समय में बड़ी कुशलता के साथ टंकित करने वाले मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री.मुकुंद ढवळे जी तथा उनके सहकारी श्री.राजू कुलकर्णी जी की कृतज्ञ हूँ।

S. P. Bankar.

सातारा **(सारीका प्रकाश बनकर)**

दिनांक - 16-9-2004

अनुक्रमणिका

	नंबर
प्रमाणपत्र	प्रथम
अनुशंसा	द्वितीय
प्रख्यापन	तृतीय
प्राक्कथन	चतुर्थ
अनुक्रमणिका	अष्टम
प्रथम अध्याय :- ''नागार्जुन का व्यक्तित्व और कृतित्व''	**1 - 38**
व्यक्तित्व - जन्म, बचपन, परिवार, शिक्षा, विवाह, नौकरी, बाह्य व्यक्तित्व, आंतरिक व्यक्तित्व ।	
कृतित्व - उपन्यास, काव्य, कहानी, यात्रा प्रसंग, निबंध,संस्मरण, भाषण चिठ्ठी-पत्री, पुरस्कार, निष्कर्ष।	
द्वितीय अध्याय :- ''नागार्जुन के उपन्यासों में कथ्य''	**39-126**
कथावस्तु के तत्त्व ।	
कथावस्तु के प्रकार।	
कथावस्तु का महत्त्व।	
आलोच्य उपन्यासों का कथ्य।	
निष्कर्ष ।	
तृतीय अध्याय :-''नागार्जुन के उपन्यास में चित्रित ग्रामजीवन ''	**127-202**
ग्राम जीवन एवं ग्रामव्यवस्था।	
रुढि, परंपरा।	
अंधविश्वास ।	
धर्मव्यवस्था ।	
जातीय भेदाभेद ।	
नारी की स्थिति ।	
अवैध संबंध ।	
शिक्षा व्यवस्था ।	

शोषण के आयाम।
राजनीतिक चेतना।
प्राकृतिक आपदा।
विवाह संस्कार।
मृतक संस्कार।
संगठन।
निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय :-''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन की समस्याएं'' **203-256**

1) **अंधविश्वास की समस्या** - अंधविश्वास की समस्या, भूत-प्रेत, चुडैल-डायन, जडी-बुटी, जादू-टोणा संबंधी, शकुन, अपशकुन, पाप-पुण्य संबंधी।
2) **शोषण की समस्या**-जमींदारों द्वारा, पुलिस द्वारा, अंग्रेज, धार्मिक व्यक्तिद्वारा शोषण की समस्या, नारी शोषण।
3) **जातीय भेदाभेद की समस्या**।
4) **भ्रष्टाचार की समस्या।**
5) **अशिक्षा की समस्या।**
6) **यौन संबंधों की समस्या।**
7) **अन्य विविध समस्याएँ** - नशापान की समस्या, भूख, दरिद्रयता की समस्या, प्राकृतिक आपदा की समस्या।

निष्कर्ष।

पंचम अध्याय :- ''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन में प्रगतिवादी चेतना'' **257-291**

1) प्रगतिवादी उत्पत्ति और स्वरुप।
2) प्रगतिवाद का उद्देश्य और उसकी विशेषता।
3) उपन्यास और चेतना।
5) ग्राम व्यवस्था एक स्वरुप।
   अ) ग्राम का स्वरुप
   ब) ग्रामचेतना निर्माण एवं निर्मिति के कारण।

6) नागार्जुन के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ और समाजवादी चेतना।
7) विभिन्न आंदोलनों की अभिव्यक्ति।
8) आलोच्य उपन्यासों में प्रगतिवाद।
निष्कर्ष।

षष्ठम अध्याय :- **'उपसंहार'** **292-299**

संदर्भ ग्रंथ सूची **300-304**

---xxx---